तारा कवि के रहीम'-प्रशंसा परक कतिपय अज्ञात छन्द

- प्रताप कुमार मिश्र ©

Pratapm1977@gmail.com

सारसंक्षेप

रहीम की हिन्दी कविता और हिन्दी-साहित्य को रहीम का योगदान पिछले सौ; सवा सौ वर्षों से भारतीय साहित्य के अनुसन्धित्सु विद्वान् तथा साहित्यानुरागियों के लिए आश्चर्य का विषय रहा है, जबकि उससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि आज तक उनकी हिन्दी कविता इदमित्थम् रूप में व्यवस्थित नहीं की जा सकी है। रहीम से संरक्षित होने वाले हिन्दी-कवियों में कई ऐसे कवि हैं जिनकी पहचान आज तक नहीं हो सकी है। तारा इसी तरह के एक हिन्दी कवि हैं। पिछले दिनों यूरोप से आए एक हिन्दी अनुसन्धित्सु विद्वान् मित्र के आग्रह पर रहीम की, एवं रहीम पर अनुपलब्ध एवं अप्रकाशित हिन्दी रचनाओं को प्रकाश में लाने की यह पहली शृंखला है।

की-वर्ड्स – रहीम, रहिमन, हिन्दी कविता, हिन्दी साहित्य को रहीम का योगदान, रहीम संरक्षित हिन्दी कवि, तारा, ताराकवि, कवि तारा.

मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य के इतिहास में तारा-कवि का नाम बहुत अधिक चर्चित नहीं है और न ही इनके कृतित्व से सम्बन्धित विशेष कुछ ज्ञान ही। मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य और विशेषकर रीति-काल पर अनुसन्धान करने वाले साहित्य-प्रेमी विद्वानों ने यदा कदा तारा कवि का नाम्ना उल्लेख अवश्य किया है और इस क्रम में उन्होंने तारा कवि को रहीम के दरबार और संरक्षण से संबद्ध बताया है । तारा कवि को रहीम से संरक्षित बताते हुए बमबम सिंह 'नीलकमल' कहते हैं – "ये भी इनके आश्रित कवि थे और वीर-रसात्मक रचना करते थे।"[1] किन्तु उपर्युक्त सूचना के विपरीत वीर-रस से संबन्धित इनका कोई संग्रह आज तक हमें नहीं प्राप्त हो सका है। हिन्दी-साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में भी तारा कवि के विषय में प्रामाणिक विवरण अनुपलब्ध हैं और याज्ञिक, जायसवाल, समरबहादुर सिंह, बमबम सिंह आदि रहीम-विशेषज्ञ विद्वानों में से किसी ने भी इस विषय में कोई प्रामाणिक विवरण नहीं दिया है। शिवसिंह सरोज में भी "सुन्दर कविता करी है"[2] के अलावा कोई अन्य

© अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी.

1. रहीम साहित्य की भूमिका, लेखक-बमबम सिंह नीलकमल, पृष्ठ-256.

2. शिवसिंह सरोज, संपादक : किशोरीलाल गुप्त, पृष्ठ-712.

विवरण नहीं दिया गया। यहाँ यह ध्यातव्य है कि बमबम सिंह ने तारा को, रहीम का आश्रित बताया है जबकि सरोजकार ने तारा के समय को १८३६ के रूप में सङ्केतित किया है। यह १८३६ भी पता नहीं संवत् है या ईसवी। निस्सन्देह इस प्रसङ्ग में सरोजकार का विवरण भ्रमजनक प्रतीत होता है, कारण उनके बहुत से विवरण; विशेषकर काल-निरूपण परक विवरण, भ्रान्त हैं और परवर्ती शोध एवं अनुसन्धान के निष्कर्षों के आलोक में खण्डित हो जाते हैं। फिर रहीम के बाद लगभग दो सौ वर्षों के अनन्तर तारा को क्या पड़ी थी कि वे रहीम की स्तुति में पद्य लिखते अतः जब तक तारा पर प्रामाणिक अध्ययन एवं अनुसन्धान नहीं हो जाता तब तक तारा को रहीम का ही आश्रित मानना उचित होगा। रहीम-प्रशंसा परक तारा का वह छन्द जिसे मुंशी जी के खानखानानामा, भाग-२, पृष्ठ-१३९ से यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, -निम्नवत् है –

जोरावर अब जोर रवि-रथ कैसे जोर, बने जोर देखे दीठि जोरि रहियतु है,
है न को लिवैया ऐसो, है न को दिवैया ऐसो, दान खानखाना के लहे ते लहियतु है।
तन-मन डारे बाजी द्वैंतन सँभारे जात, और अधिकाई कहौ कासों कहियतु है,
पौन की बड़ाई बरनत सब 'तारा कवि' पूरो न परत याते पौन कहियतु है।

सरोजकार ने तारा के जिस पद्य को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है, वह उपर्युक्त पद्य से भिन्न है -

गुंजा मिले खंजन की, भौंर भए कंजन की, बारि विधु मंजन औ अंजन समेत हैं
नेह भरे सागर, सनेह भरे दीपक से, मेह भरे बादर सलोने लखि खेत हैं।
तरल त्रिबेनी के तरंगन मैं 'तारा कवि' मानो सालिग्राम असनान के निकेत हैं
मृगमद लागे, साखामृग दृग दागे, मैन छाजन में पागे नैन ऐसे सोभा देत हैं।।

अपने अध्ययन एवं अनुसन्धान के क्रम में जब मैं 'नागरीप्रचारिणी सभा, काशी के विशाल हस्तलेख संग्रहालय में विभिन्न पाण्डुलिपियों का अध्ययन कर रहा था तब एक अत्यन्त प्राचीन हस्तलेख में; जो कि १७७८-७९ विक्रम संवत् में प्रतिलिपि-कृत है और इसमें विभिन्न ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां संगृहीत हैं, -एक कवित्त संग्रह के मध्य तारा कवि के नाम से निम्नलिखित छन्द उल्लिखित मिला। यह छन्द शुद्ध शृङ्गार का उदाहरण है और बमबम सिंह के 'वीर रसात्मक रचना करते थे' कथन से समीक्षणीय है, हाँ सरोजकार द्वारा प्रस्तुत उदाहरण भी शृङ्गार का ही उदाहरण है और इस प्रसङ्ग में वह भी ध्यातव्य है। छन्द निम्नवत् है[3] -

3. नागरीप्रचारिणी सभा, काशी में इस हस्तलेख की रक्षित-संख्या - 914 है और इसका लिपिकाल संवत् 1778 विक्रमी है। तारा के ये छन्द अद्यावधि अप्रकाशित और अज्ञातप्राय हैं। विशेष विवरण हेतु उपर्युक्त हस्तलेख का अध्ययन करना चाहिए.

कोकिला की कूक सुनि काननि में करि कीजै, कारो जल कालिंदी को कहा कीजियतु हैं
काजर न काम आवै, भौनहू न देख्यो भावै, कारो घन देखे घनो छीजीयतु हैं।
कारो तन स्याम कों निहारैं विनि 'तारा कवि' कारै जान केसन कों जूरा दीजियतु हैं
अब याद आये ते गरे तें पोत काढ़ि डारों, दूध के जरै तें छाछ फूंक पीजीयतु हैं।।

प्रस्तुत छन्द के अलावा इसी पाण्डुलिपि में पत्र-संख्या ७०, पृष्ठ-७० एवं उसके अगले पृष्ठ पर; जो कि ७१ वें पृष्ठ का पूर्ववर्ती पत्र है -में तारा कवि का एक दूसरा छन्द भी उद्धृत है। यहाँ इस हस्तलेख में प्रस्तुत तारा कवि के इस छन्द के विषय में सावधानी से निम्नलिखित सूचनाएं पढ़ी जाएं –

उपर्युक्त पत्र संख्या ७० एवं उसके अगले पत्र के पूर्ववर्ती पृष्ठ पर जो तारा कवि के छन्द प्रस्तुत हैं, उसके पहले भी अर्थात् उस छन्द से पूर्व एक, और उस छन्द के बाद भी; दो छन्द और प्रस्तुत हैं जिनमें कि किसी भी रचनाकार का उल्लेख नहीं है। हमारे विचार से यह सभी छन्द तारा के ही हैं। तारा की छाप वाले छन्द से पूर्ववर्ती छन्द को तारा-रचित मानने के पीछे हमारा तर्क यह है कि ये शृङ्गार-परक हैं जैसा कि तारा लिखा करते थे और इसकी भाषा और रचना-शैली उसी प्रकार है जैसी तारा के उपर्युक्त छन्दों में देखी जाती है। इसी प्रकार तारा की छाप वाले छन्द के बाद वाले दो छन्दों को भी तारा-रचित मानने के पीछे हमारा तर्क यह है कि इनमें दूसरे और अन्तिम छन्द के तीसरे चरण में "दन्तन केसर भये दन्तन नायक तुह खानखाना साहिब कहाँ लौं ऐही सहीये" खानखाना को संबोधित किया गया है, इसका सीधा सा आशय है कि इस छन्द का रचयिता खानखाना को संबोधित करते हुए कविता लिख रहा है और जब इसी के पूर्व तारा कवि का छन्द प्राप्त हो रहा हो तो प्रसङ्ग-प्राप्त खानखाना-प्रशंसापरक छन्द के रचयिता के रूप में तारा को छोड़ किसी अन्य कवि का ग्रहण करना युक्तिसङ्गत नहीं प्रतीत होता। अतः इन दोनों छन्दों के भी रचयिता के रूप में तारा कवि को ही स्वीकार करना चाहिए। ये समस्त छन्द निम्नवत् हैं और प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा मूल हस्तलेख से यथाशक्ति शुद्ध कर प्रस्तुत किए गए हैं, पाठ की असङ्गति की स्थिति में मूल हस्तलेख देखें -

लागे तीर काम हैं री, महावर तीर हैं री, प्यारे पै नहीं रहैं री, कैसे वर तीर हैं
बातैं जो कही रहैं री, सिमरत ही रहैं री, वै तो कित हीर हैं री, खित ही चही रहैं ।
कौन वर जी रहैं री, कौन वर जी रहैं री, कौन वर जी रहैं री, कौन वर जी रहैं
अङ्ग अङ्ग पिय रहैं री, पिय बिनु तीर हैं री, आंखें आंसू पी रहैं री, जाको न्यारो पी रहैं ।।

इस पद्य में शब्दश्लेष का जाल सा बिछाकर रखा गया है, अतः बहुत ही सावधानी से अर्थानुसन्धान करना चाहिए, खासकर तीसरे चरण में।

जब ते भई है पहचान मनमोहन सों तब तें तंही है फेर नैकन निहारि हौं
दरसे परसे अङ्ग अङ्ग सुख पावत है, आप ही समीप मैं तो न्यारी कर डारि हौं।
प्रेम की सकत तें सकत मुख बोलबे की, पीय बिनु जियत ऐसी हौं ही दुखारी हौं
..बी लगतहिं लगन होत 'तारा कवि' पिय की कहा है मेरे जियने बिसारी हौं।।

चीकने चिहुर चंद्र चंद्रमा से मुख पर, चौका की चमक देख, चपला लजानी है,
हाटकी सी देह कर ताटी चीर को चुनाव, चूरा की चमक देख, उपमा खिसानी है।
चोवे सों चुपरी चोली चुभी है कुचन बीच, चांदनी मैं ठाढ़ चंद कला जो लुभानी है
देसी नीकी नाइका निहारै प्रभु तीरथ मैं, मानो सुर लोक तें उतार अब आनी है।।

ऐ हो दिलजानी भौरें जानी जानि आए मेरै ईहाँ मेरों क्यों कर गरब गढ़ ढहिये
जामहू कै धोखैं चोथे जाम निस धारी कहा, राना लागि काहे को विराना मन दहीये।
दन्तन केसर भयें दन्तन नायक तुह्म, खानखाना साहिब कहाँ लौं एही सहीये
खिरकी को धोखै मेरी खिरकी न धोखै पाव, अंबर के धोखे मेरो अंबर न गहीये।।

हम पीछे चर्चा कर आए हैं कि यद्यपि हिन्दी-साहित्य के इतिहास में तारा कवि का विशेष उल्लेख नहीं है और आज तक इस कवि के वैयक्तिक परिचय या इसके पूर्ण कृतित्व की बाबत हम कुछ विशेष जानकारी नहीं रखते तथापि इतिहास के सन्दर्भों से ही इतना अवश्य सिद्ध है कि तारा कवि मध्यकालीन भारत की महान् विभूति, अद्भुत सेनापति, उद्भट योद्धा, विकट राजशास्त्री, संस्कृत-हिन्दी-अरबी-फारसी-तुर्की आदि भाषाओं के सिद्ध रचनाकार और विशेषकर हिन्दी-कविता के 'यदेबैजा' खानखाना अब्दुर्रहीम खां 'रहीम' के संरक्षण में थे और इनकी देखरेख में ही हिन्दी-कविता की सेवा किया करते थे।[4]

अधुना पर्यन्त तारा की पूर्ण कृतियों का कोई विवरण उपलब्ध नहीं है और यत्र तत्र इनकी एक-दो रचनाएं ही उपलब्ध हैं। आज तक तारा के जिन छन्दों की उपलब्धि संभव हो सकी है उनमें अधिकांश रहीम की प्रशंसा में ही लिखे गए हैं और अन्य छन्द विविध विषयक शैङ्गारिक छन्द हैं। इस पत्र में तारा के कतिपय अज्ञात छन्दों की ओर इतिहासविद् विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया गया है ताकि इन छन्दों की जांच-पड़ताल कर तारा के अन्य छन्दों और कृतियों को भी खोज का विषय बनाया जाए और हिन्दी-साहित्य के अनन्य उपासक रहीम की हिन्दी-सेवा की विशृङ्खलित शृङ्खला में भूले बिसरे कवियों और उनके काव्यों को यथोचित सम्मान दिया जाए।

4. तारा कवि के रहीम संरक्षित होने संबन्धी विवरणों को अधिक विस्तार से जानने हेतु पढ़िये - 'खानखाना अब्दुर्रहीम और संस्कृत' पृष्ठ : 73-76.

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची :

1. गुप्त, डा. किशोरीलाल, (संपादक) 1970 ई., शिवसिंह सरोज, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद.
2. नीलकमल, डा. बमबम सिंह, 1979 ई., रहीम साहित्य की भूमिका, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना.
3. मिश्र, प्रताप कुमार, 2007 ई. , खानखाना अब्दुर्रहीम और संस्कृत, अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी.